UNIVERSAL LIBRARY

OU_182264
UNIVERSAL LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H81 M67C Accession No. H 3297

Author मिश्र, आनन्द.

Title चन्देरी का जौहर 1957

This book should be returned on or before the date last marked below.

चन्देरी का जौहर

☞ हमारा अन्य अनुपम काव्य-साहित्य ☜

दर्द दिया है (प्रसिद्ध कवि नीरज जी की नई कविताएँ)	'नीरज'	४.००
आँखों में (शृङ्गार रस काव्य)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	२.२५
रूप-दर्शन (सचित्र सरल कविताएँ) (पुरस्कृत)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	६.००
वन्दना के बोल (गांधी जी पर कविताएँ) (पुरस्कृत)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	२.२५
बलिपथ के गीत (पुरस्कृत)	जगन्नाथ प्रसाद 'मिलिन्द'	३.००
रावण महाकाव्य (पुरस्कृत)	हरदयालुसिंह वर्मा	५.००
गीत-गोविन्द (सचित्र पद्यानुवाद) (पुरस्कृत)	विनयमोहन शर्मा	५.००
काव्य-धारा (संकलित कविताएँ)	डॉ. इन्द्रनाथ मदान	३.५०
मधु-संचय (संकलित कविताएँ)	बालकृष्ण राव	२.५०
प्राणोत्सर्ग (चार वीरांगनाओं की काव्य-गाथाएँ)	देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'	१.२५
काव्य-धारा (कविताएँ)	शिवदानसिंह चौहान-गोपालकृष्ण कौल	६.००
प्रथम समन (कविता संग्रह)	सत्यवती शर्मा	१.००
कदम-कदम बढ़ाए जा (वीर रस पूर्ण खण्डकाव्य)	गोपालप्रसाद व्यास	१.२५
अजी सुनो···! (सचित्र हास्य रस कविताएँ)	गोपालप्रसाद व्यास	५.००
अमृतप्रभा (ऐतिहासिक काव्य)	राजेश्वरप्रसाद नारायणसिंह	०.६२
अम्बपाली (ऐतिहासिक काव्य)	राजेश्वरप्रसाद नारायणसिंह	३.५०
राधा-कृष्ण (सचित्र कविताएँ)	राजेश्वरप्रसाद नारायणसिंह	२.५०
संकलिता (सचित्र मधुर गीतों का संग्रह)	राजेश्वरप्रसाद नारायणसिंह	२.५०
जिप्सी (पुश्किन) (काव्य)	अनुवादक—वीर राजेन्द्र ऋषि	२.००
काव्य-संग्रह (संकलित कविताएँ)	दशरथ ओझा-उदयभानु सिंह	२.००
चन्देरी का जौहर (सचित्र खोजपूर्ण-ऐतिहासिक-खण्डकाव्य)	आनन्द मिश्र	२.००
बाल-मेला (सचित्र बाल कविताएँ)	शम्भूनाथ 'शेष'	०.७५
एक था राजा, एक थी रानी (सचित्र तथा मनोरंजक पद्य-कथाएँ)	चिरंजीत	१.२५
नटखट के गीत (हास्य और विनोदपूर्ण सचित्र कविताएँ)	चिरंजीत	१.००
शिशु-गान (सरल तथा रोचक कविताएं)	आर. बी. अवधेश	१.२५
अमृत का झरना (बच्चों के लिए कथात्मक कविताएं)	लक्ष्मण त्रिपाठी	०.२५
नव-प्रभात (सचित्र कविताएँ)	चन्द्रिकाप्रसाद मिश्र	०.७५
हिन्दी कविता में युगान्तर (कविता विकास का अध्ययन)	डॉ. सुधीन्द्र	८.००

आत्माराम एण्ड संस, काश्मीरी गेट, दिल्ली-६

चन्देरी का जौहर

(खोजपूर्ण-ऐतिहासिक-खण्डकाव्य)

लेखक

आनन्द मिश्र

१९५७

आत्माराम एण्ड संस

प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता

काश्मीरी गेट

दिल्ली-६

प्रकाशक
रामलाल पुरी
आत्माराम एण्ड संस
काश्मीरी गेट, दिल्ली-६

Checked 1963

Checked 1969 [सर्वाधिकार सुरक्षित]

मूल्य रु० २.००

मुद्रक
सूबीज़ प्रेस
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

बहन सुशीला व कमला को

जिनके पवित्र-स्नेह की छाया में मेरी कविता

पली, फली, सजी, सँवरी,

अनेक शुभकामनाओं सहित

निवेदन

'साधना' के प्रकाशन के पश्चात् फुटकर कविताओं और गीतों के अतिरिक्त, जो समय-समय पर हिन्दी की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं, इन दिनों इस ऐतिहासिक-खण्डकाव्य 'चन्देरी का जौहर' की रचना हुई, यह प्रथम अवसर है जब किसी ऐतिहासिक-घटना की पृष्ठभूमि पर मैंने यह 'दीर्घ-कविता' लिखी है, इस संक्षिप्त-प्रारम्भिक निवेदन में यह आवश्यक है कि रचना के ऐतिहासिक-आधार के सम्बन्ध में वांछित-प्रकाश डाला जाय, जिससे ऐतिहासिक-घटना की जानकारी के साथ-साथ मेरे अपने दृष्टिकोण को भी समझना सुलभ हो सके, मैं पिछले एक वर्ष इस ऐतिहासक-अन्वेषण में लगा रहा हूँ, घटना बहुत उलझी हुई होने के कारण तथा साथ ही ऐतिहासिक-सामग्री के अभाव में मुझे इसे पूरा करने में बड़ी बाधाओं का सामना करना पड़ा, इन उलझनों के कारण ही मैं इसे जिस रूप में लिखना चाहता था, नहीं लिख सका हूँ, मैं इसमें बहुत से अभाव देखता हूँ, लेकिन लगता है कि जो कुछ लिखा गया है, काम का है।

एक बात और कहना चाहूँगा, कि मेरे कवि की आयु ५½ वर्ष की है, जीवन की भी २२ बरसातें देख पाया हूँ, इस अल्प-साहित्य-साधना-काल में, अध्ययन, चिन्तन-मनन, एवम् अनुभव के माध्यम से जो कुछ मिला है परखा है, सँजोया है, संवारा है, जो अच्छा लगे, उपयोगी हो, ग्रहण कर लीजिए, अभाव, वापिस मेरी झोली में डाल दीजिए, परिमार्जित करूँ, और नए रूप में आपके सामने रक्खूँ, आपका और मेरा यह विनिमय जीवन भर चलता रहे, यही कामना है।

ऐतिहासिक-आधार

भारत के हृदयस्थल, मध्यप्रदेश के गौरवशाली-इतिहास में 'चन्देरी' का महत्वपूर्ण स्थान रहा है, पौराणिक-काल में राजा शिशुपाल की राजधानी 'चन्देरी' ने अबतक देश के इतिहास में कई बहुमूल्य-स्वर्ण-पृष्ठ जोड़े हैं। चन्देरी की समृद्ध-अवस्था के सम्बन्ध में, केवल दो उद्धरण यहाँ दे रहा हूँ, इन दो उद्धरणों से पाठक इसके विगत-वैभव का सहज ही अनुमान लगा सकेंगे, सर्वप्रथम भक्ति-काल के एक प्रसिद्ध-कवि 'छीहल' की चार-पंक्तियाँ देखिए—

देखा नगर सुहावना, अधिक सुचंगा थानु,
ना चन्देरी परगटा, जनु सुरलोक समान,

ठाईं-ठाईं सरवर पेखिइ, सूभर भरे निवाण,
ठाईं-ठाईं कुआं बावरी सोहइं फटिक सवाँण,

दूसरा उदाहरण प्रसिद्ध इतिहासकार Kaye और Mallenson की प्रसिद्ध पुस्तक 'Indian Mutiny' से दे रहा हूँ—

"If you want to see a town, whose houses are palaces, visit Chanderi. It was a proverb in the time of Akabar."

गरिमामयी 'चन्देरी' के इतिहास में 'चन्देरी का जौहर' एक अभूतपूर्व महान-घटना है, ऐसी घटना, जिसने 'चन्देरी' के गौरव में चार चाँद लगा दिए हैं। १५२७ ई० में इतिहास-प्रसिद्ध 'खानवा' का युद्ध हुआ, इस युद्ध में राणा-साँगा की पराजय, भारतवर्ष की पराजय थी, इस पराजय ने देश की स्वाधीनता की रक्षा के सारे स्वप्न चूर-चूर कर दिए थे, राणा साँगा के बाद 'चन्देरी' ही राजपूतों की शक्ति का एक-मात्र केन्द्र था। राणा-साँगा को पराजित करने के पश्चात् 'बाबर' ने चन्देरी पर आक्रमण किया। जनवरी १५२८ ई० में बाबर ने अपनी विशाल-वाहिनी के द्वारा चन्देरी के चारों ओर घेरा डाल दिया, वीरवर 'मेदिनीराय' इस समय चन्देरी के अधिपति थे, 'मणिमाला' उनकी रानी। घेरा डालने के पश्चात् बाबर ने मेदिनीराय के पास सन्धि-पत्र भेजा, बाबर वीर-योद्धा होने के साथ-साथ दूरदर्शी व्यक्ति भी था, चन्देरी की सुदृढ़-भौगोलिक-स्थिति से वह परिचित हो चुका था, साथ ही, पिछले कई युद्धों में राजपूतों की तलवार का पानी भी तोल चुका था, जिसे उसने अपनी आत्मकथा में स्वीकार भी किया है, इतिहासकार अथवा आलोचक स्वीकार करें या न करें! मेरा मत है कि पराजय की आशंका ने उसे सुलह की राह अपनाने को बाध्य किया, 'शेखगुरेन' और 'आरायश खाँ' पठान के द्वारा यह सन्धि-पत्र मेदिनीराय तक पहुँचाया गया, सन्धि की शर्तें भी साधारण थी, 'पराजय स्वीकार कर लो, चन्देरी छोड़ दो, और इस सब के बदले में शमशाबाद ज़िला तुम्हें मिल जाएगा।' आन पर मर मिटने वाले मेधावी-मेदिनीराय के लिए यह साधारण शर्तें भी स्वाभिमान पर प्रखर-आघात सिद्ध हुई। पाँच छः हजार राजपूतों की नगण्य-सेना के बलपर ही स्वाभिमानी, स्वतन्त्रता-प्रेमी, मेदिनीराय ने बाबर का सन्धि-पत्र ठुकरा दिया—

"As 'Araish-Khan' had long been on terms of friendship with Madinirao, I sent 'Araish Khan' with 'Sheikh-guren' to assure him of my favour and clemency and offering him Samshabad (a town in Quaimgunj Tehsil of Farukkhabad district) in exchange of Chanderi. Two or three considerable people about him were averse to consiliation. I know not, whether he did not place perfect reliance in my promises or it was from confidence in the strength of his fort, the treaty broke-off with out success

(Babar-nama, Mamoirs of Jahiruddin Baber. The emperor of Hindustan. Translated by John Leyden and William Erskin Esq.)

बाबर की विशाल-वाहिनी ने चन्देरी पर आक्रमण किया, बुन्देलखण्ड में रहने वाले राजपूत-घरानों में प्रचलित किंवदन्ती के अनुसार हिम्मतसिंह नामक राजपूत का देशद्रोह बाबर की विजय में बडा सहायक सिद्ध हुआ, 'बाबरनामा' के अनुसार बाबर ने चन्देरी को केवल तीन घड़ी में जीत लिया, मै नहीं मानता। 'बाबरनामा' का पूरा वर्णन मुझे एकांगी लगता है, स्वाभाविक भी है कि अपने पक्ष के सबल-समर्थन में वह सत्य पर आवरण डाले, चन्देरी नगर कहते हैं उस समय ३२ मील के विशद-क्षेत्र में बसा हुआ था, तीन ओर से वेतवा और उर नदियों से घिरे, चौथी ओर विंध्याचल पर्वत की नभचुम्बी-श्रेणियों से रक्षित, जनश्रुतियों के अनुसार ७ कोटों के घेरे में सुदृढ़ (जिनके ध्वंसावशेष आज भी प्राप्त हैं) इस चन्देरी के दुर्भेद्य-दुर्ग को, जिसके बीहड़-वन मध्य प्रदेश के दुर्गम-वनों में अग्रणीय है, तथा जिसकी अपराजेय-स्थिति बाबर भी स्वीकार कर चुका है—

"...or it was from confidence in the strenght of his fort !" ऐसी अवस्था में जबकि पाँच छः हजार राजपूतों की सेना पग-पग पर बाधक हैं, तीन घड़ी में जीत लेना मै सोचता हूँ, कठिन ही नहीं, असम्भव है, मैने इसी आधार पर युद्ध दो दिन माना है, दो दिन के घमासान-युद्ध के बाद अल्प-राजपूत पराजित हुए, स्वतन्त्रता की बलि-वेदी पर एक-एक कर सबने अपनी आहुति दी, सब कहते हैं, राजपूत पराजित हुए, पर जाने क्यों ! मै उन्हें विजयी मानता हूँ—

मेदिनीराय लड़ते-लड़ते भू-शयी हुए,
रिपु-दल का जय-उद्घोष चतुर्दिक व्याप्त हुआ,
सब कहें, पराजित राजपूत, मैं कहता हूँ,
वे सदा जयी, भीषण नरमेध समाप्त हुआ,

परम्परानुसार क्षत्राणियो ने जौहर का निश्चय किया, जैसलमेर और चित्तौड के जौहर भारतवर्ष के इतिहास की गौरव-वृद्धि है, यह 'जौहर' भारतवर्ष जैसे बलि-दानी देश के लिए नई-बात नही थी, लेकिन इस घटना के जिस विशिष्ट एवम् महान-अंग ने मुझे खण्डकाव्य लिखने के लिए बाध्य किया है, वह है बालकों का वध, किसी इतिहास में इस अनूठी-घटना का उल्लेख नही मिलता, 'बाबरनामा' में तो जौहर का भी पता नहीं, किन्तु उसे प्रमाणित करने के लिए चन्देरी-दुर्ग में स्थित सती-स्मारक, जौहर-तलैया, एवम् जौहर-शिला-लेख, जिनके चित्र पुस्तक में दिए जा रहे हैं, पर्याप्त हैं, बालकों के वध का कोई ऐतिहासिक पुष्ट-प्रमाण मुझे प्राप्त नहीं हो सका, और इसका कारण भारतीय इतिहास के पर्याप्त अन्वेषण का अभाव ही है, हाँ, मेरी मान्यताओं के विपरीत एक इंगित, अंग्रेज विद्वान प्रो० स्टेनले लेनपोल महोदय की प्रसिद्ध पुस्तक 'बाबर' में मुझे प्राप्त हुआ। लेनपोल महोदय बात को कहते हैं, लेकिन

दूसरे ढंग से ! राजपूतों की दुर्ग में संख्या एवम् सन्धि-पत्र ठुकराये जाने का उल्लेख करते हुए लेनपोल महोदय लिखते हैं—

"Babar reached Chanderi on 20th Jan, 1528. Madinirao was in his Fortress with some five thousand of his gallant followers, and proudly rejected Babar's offer of terms .....the desperate Rajputs seeing that all was lost, killed all their children and women and rushed out necked fell furiously upon the muslims."

(*Page 182, 183, Babar-Stanley Lanpole M. A. Proffesor of Arabic, Trinity College, Dublin*)

लेनपोल महोदय के कथनानुसार स्त्रियों तथा बालकों का वध राजपूतों के द्वारा प्रमाणित होता है, किन्तु स्थिति इसके बिल्कुल विपरीत है, स्त्रियाँ और बालक यदि राजपूतों के द्वारा काट दिए गए, तो जौहर किसने किया ? स्त्रियों ने अग्निप्रवेश के द्वारा अपनी अमर-आहुति दी है, शिलालेख सम्भव है कि इस बात की सत्यता प्रमाणित कर दे !

"अत्र सरस्तीरे असंख्याता राजपूत-वीरांगना,
सतीत्व-रक्षार्थं जौहरेण विधिना ज्वलनं प्रविश्य दिवंगता :"

तो स्त्रियों का वध राजपूतों की तलवार से नही हुआ, और यह असम्भव था कि उन माताओं-बहनों की उपस्थिति में छोटे-छोटे बालक राजपूतों की तलवार से काट दिए जाते, अंग्रेज़-विद्वान लेनपोल की यह मान्यता सत्य है, अथवा मेरा तर्क, इसे प्रमाणित करने के लिए मैं राजपूत-घरानो में गाए जाने वाले लोक-गीतों के कुछ अंश यहाँ प्रस्तुत करना चाहूँगा, स्थिति स्पष्ट हो जाएगी । जो लोक-गीत मैं सबसे पहले प्रस्तुत कर रहा हूँ, अपने आप में पूर्ण एक उत्तर्ग-कथा है, वैसे कथानक से सम्बन्धित तो केवल चार पंक्तियाँ हैं, किन्तु पाठक पूरे लोक-गीत का आनन्द ले सकें यह लोभ मैं संवरण नही कर पाता हूँ, भारतीय-गौरव की प्रतीक ऐसी न जाने कितनी घटनाएँ अतीत के गर्भ में प्रच्छन्न हैं, जिनपर बड़े अन्वेषण की आवश्यकता है ।

लोकगीत—बीजा, श्रावण के दिनों में बुन्देलखण्ड में गाया जाता है ।

प्राप्ति स्थान, किशनगढ़, ज़िला बिजावर, विंध्य प्रदेश—

कुंअरि बिजौरा की बढ़ति है, जैसे जुन्हैया की काय,
भुरारेंई भरन जल कुअटा पै जाय,
जाके लाम्बे-लाम्बे, केस, सिगरी सुरत जाकी नैनन में,
क चंदना पै पूनों कौ बैठो तमोर,
सुनि के ताकी पिसार, मन डोलै है मैहर पठान कौ,
औ लैके कटक की बेल, आओ बिजौरा के गाम,
सिंघन भैया ने सहेज राखे जो नौ सै सवार,

टूटौ बसीरी गाज, खदेरौ हैं मैहर पठान,
पै काहे को मानैं पठान,
लैके कोरे लाल, तैतौ आओ है बियबान,
तानैं तमुअन को तानौ बिसान,
जानें कोऊ साऊकार बनिज की गैल कौ बसेर,
औ पहुँचाए बिजौरा में सवार,
भौजी रोके पनघट जिन जाऊ, बाई ! दांतु लगाए पठान,
भैया रोके पनघट जिन जाऊ, बाई मैहर कौ कोटी पठान,
पै बेला न मानैं बात, पीरी में कुअटा पै जाय,
औ संगऊ बेसिन सहेल,
बेला ने लओ जौंई पैलौ घाट, बगियन ते निकर परे असवार,
पानी तौ पी हैं तिहारे गाँव,
घटुला पै छैऊ सहेल, बेला के अंगे सिहान,
'रे सँभर कैं बोजैं पठान, हम बिन्ना लागैं तिहार,
आगेते कारौ म्वार ताके उन्झे बिलटिया केस,
"तोहे बीबी बनाऊँ मैहर के राज की"
"नाई पठान हम बिजौरा में भली, करौ कछू तौ धरम की बात,
नाई पठान मैं तेरे घरन जाऊँ, कुंअटा में मरूँ, जहर-बिस खाऊँ,"
"तिहारी नौनी छबिन की रासि, तुम कैसें मरोंगी बिस खाय"
"जौका कातु है पठान, तेरौ देसु है बलख-बुखार,
तू का जाने जा भुम्मि की आन,
तैनें देखे का जौहर विसेख,
धरम कोंई रामने छोड़ो घर-द्वार, धरम कोई पंडवाउन्ने धारौ जोग,
धरम कोंई चँदेरी की असी हजार छतैनिन्नें काटे सपूत,
औ ठाड़ी जरैं चँदेरी की मैढ़ें सवार, और का सुनकें करौगे पठान।"
औ घुड़िला पै बदिगौ पठान, बेला तन बढ़ाओ है हाथ,
कै धूमर सी संग सहेल, बेला नें लै लई छहार,
कुअटा में गई है समाय, ठाड़ो पठान तोबा करै। महाराज······।

दूसरे लोक गीत की दो ही पंक्तियाँ उद्धृत कर रहा हूँ —

"चँदेरी को जाईये, जौहर की देउनि की धूरिकों लगाईये माथ,
पै जिन जाईये, मलेछिन की छउनियाँ, जिन लग काटे कुमार !

दो लोकगीत और देखिये—

एजी हमतौ ऐं बिट्ला पठार की।
हम ताल 'अमोलक' जाएं, हमें न भयु ऐ पठान कौ,
हम चीरीं करियाँ सिरायँ, हमें न भयु ऐ पठान कौ,
हमरे जिठुला की दमकै तेग, हमरौ सोने सौ अचला सुहाग,
हम पै न देखें पठानु, हम ऐं बिट्ला पठार कीं,
जिठुला जू जूझे, सहब जू जूझे, तौ करैंगी जौहर, सबेस,
न परिहैं कि काहू के हाथु, जि साँच धरम परमान को,
पूतन कों करिहैं सपूत, कै तेगा तौ हमरे हातु है,
परिहै न एक प्रान, तिहारे हातु लौटौ पठानु,
जौ साँचौ धरम परमानु, हम ऐं बिट्ला पठार कीं।

चन्देरू-गढ़ की आगि हमारी होरी जरइयो माय।
बिरन और कंता तौ गए बैकुंठ कों,
अब का परिहैं मुसल्लन के हातु,
लक्खन-लक्खन कै गढ़िला की नारि, ठाड़ी तौ जरिगई अगिनु में,
हातन तें काटे सवालाख पूत वेन हुइएँ कबऊँ मुसलमान!
हो-चन्देरू गढ़ की आगि हमारी होरी जरइयो माय।

विषय से सम्बन्धित उक्त लोक-गीत सम्भव है कि आलोचक की लौह-लेखनी मिथ्या प्रमाणित करे, अथवा अपर्याप्त आधार माने, किन्तु मै उस भावी-भय से आक्रान्त नहीं हूँ, और न इस सम्भावना से कथानक की महत्ता के प्रति मेरी श्रद्धा में ही कमी आती है, मै मानता हूँ कि लोक-साहित्य की यह परम्परागत-धरोहर असत्य नहीं है, यह लोक-गीत इसलिये नहीं लिखे गये कि मुझे खण्डकाव्य लिखने के लिए प्रमाण की आवश्यकता है अपितु न जाने कितनी पीढ़ियों से यह राजपूत घरानों की स्त्रियों के द्वारा गाये जा रहे हैं, हाँ! इन्हें तिल का ताड़ कहा जा सकता है, किन्तु वहाँ तिल अवश्य हैं, बलिहारी है इस धर्म और स्वतन्त्रता प्रेम की ! छोटे-छोटे अबोध बालकों का वध, पुत्रों का वध माताओं की तलवार से ! भाईयों का वध बहनों की तलवार से ! संसार के इतिहास में त्याग का ऐसा उदाहरण सम्भव है, दूसरा न मिले !

बहनों ने काटे प्राणों से प्यारे भाई,
माताओं ने पुत्रों के शीष उतार दिये,
बलिहारी भारत ! और कौनसा देश जहाँ
ऐसी माताओं-बहनों ने अवतार लिये ?

कल्पना नहीं कर पाता मैं इस आहुति की,
इतना कोमल-जन, हो सकता इतना कठोर !
जिनकी आँखों में अश्रु देख फटती छाती,
उनका वध ! इन हाथों से ! हो इतनी विभोर !

महानतम् ! और तभी मेरे हृदय से फूटा—

लेखनी आज कृतकृत्य हुई, तुम मरकर मर्त्य ! अमर्त्य हुईं,
मानव - पग - पथ का शोध हुईं, जीवन का अमर-प्रबोध हुईं,
इतिहासों का अपवाद हुईं, जीवन-क्यारी की खाद हुईं,
चिर - दीप्तिमान तब है वसुधा, तुम बनीं सहास कि जब समिधा,
तुम से आलोकित प्रति रजकण, स्वीकारो शत-शत अभिनन्दन।

लोक-साहित्य से इस प्रच्छन्न-महत्-सामग्री को पाठकों तक पहुँचाते हुए, मैं जिस सन्तोष और आनन्द का अनुभव कर रहा हूँ, अवर्णनीय है !

एक बात और स्पष्ट कर देना चाहूँगा, वह यह कि रचना साम्प्रदायिकता की भावना से अछूती है, इसे उस संकीर्ण-सीमा में न बांध लिया जाय ! मेरी दृष्टि में बाबर मुसलमान बादशाह का, मेदिनीराय हिन्दू राजा पर आक्रमण नहीं, अपितु एक आक्रान्ता मनुष्य का दूसरे मनुष्य पर आक्रमण है, मैं पूरी ईमानदारी से कहना चाहूँगा, कि प्रारम्भ से अ त तक मेरी यही भावना रही है, हाँ ! बाबर का चरित्र भली भाँति उभर नहीं पाया है, और उसका कारण है, रचना के मुख्य पात्र नायक मेदिनीराय तथा नायिका मणिमाला के चरित्रों को उभार देना, जो आवश्यक था, अत. रचना साम्प्रदायिकता की सकीर्ण-परिधि से परे है !

हिन्दी कविता में भाषा और अभिव्यंजना को सरल बनाने के बहुत से प्रयोग इन दिनों किये गये हैं, किये जा रहे हैं, इस युग की नई पीढी का लेखक होने के नाते मुझ से अपेक्षा की जा सकती है कि मैं इन नये के प्रेमी लेखकों के साथ, नवीनता के इस आन्दोलन में अपना स्वर मिलाता, किन्तु यहाँ मेरी रचनाओं से सम्भवत. असन्तोष जन्म ले, इसका कारण मेरे संस्कार ही हो सकते हैं, जिनके द्वारा मेरी यह धारणा बन गई है कि हर पुरानी बात रूढ़ि कहकर ठुकरा दी जाना युक्तिसंगत और न्याय-संगत नहीं ! प्रगति का अर्थ जहाँ तक मेरी समझ में आया, यह है कि आज तक की साहित्यिक परम्परा की शृंखला में अपने आपको आगे जोड़ दो, और लेखनी उठाने के समय से आज तक मेरा सदा यही प्रयत्न रहा है कि मैं इस शृंखला की अगली कड़ी बनूं, 'त्रिशंकु' के एक निबन्ध में 'अज्ञेय जी' के इस वाक्य में मुझे अपनी भावनाएँ खेलती मिलीं कि "साहित्यिक-प्रौढ़ता प्राप्त करने के लिये 'रूढ़ि' की साधना आवश्यक

लेखक-परिचय

जन्म—जून १९३३

बृजभाषा के सुप्रसिद्ध कवि श्री हरस्वरूप मिश्र 'हरेश' एम. ए. के सुपुत्र, पितामह स्वर्गीय श्री मुन्नालाल मिश्र प्रथम-ग्वालियर-राज्य हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति रहे तथा समाज-सुधार पर बहुत लिखते रहे। लेखक का शुद्ध, सात्विक-साहित्यिक वातावरण में पालन-पोषण हुआ, सम्पूर्ण परिवार कला-प्रेमी, बड़े भाई श्री बसन्त मिश्र तथा छोटी बहन सुश्री कमला मिश्र कुशल-चित्रकार !

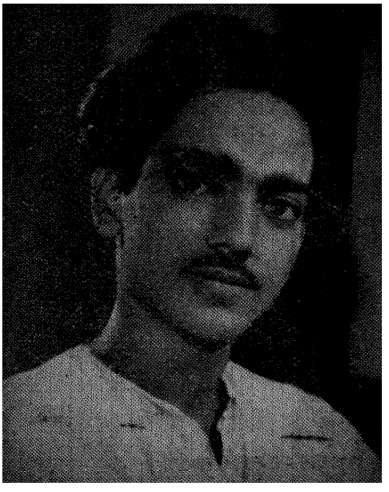

सन् १९५० से सत्रह वर्ष की आयु में लिखना आरम्भ, दो वर्ष की अविश्रान्त-साहित्य-साधना के उपरान्त १९५२ में प्रथम काव्य-संग्रह 'साधना' के नाम से प्रकाशित, उसी वर्ष मध्यभारत-कला-परिषद् द्वारा पुरस्कृत, कवि के अध्ययन का सर्वाधिक-प्रिय-अंग-दर्शन ! रचनाओं पर जिसका प्रभाव स्पष्ट है। ऐतिहासिक-अन्वेषण में विशेष-रुचि ! 'चन्देरी का जौहर' तथा इसी वर्ष प्रकाशित हो रहे ऐतिहासिक-महाकाव्य 'झाँसी की रानी' में उन्होंने नई-मान्यतायें स्थापित की है जिन्होंने इस ओर अध्ययन के नए मार्ग खोले है। इस छोटी-सी आयु में ऐतिहासिक-प्रबन्ध की प्रौढ़ रचना का उदाहरण हिन्दी में दूसरा नही। प्रबन्ध-धारा के लेखक, रचनाएँ विचार प्रधान, किन्तु सरस और प्रभावोत्पादक, खड़ी बोली के अतिरिक्त बृज भाषा तथ उर्दू में भी काव्य-सर्जना ! गद्य के क्षेत्र में साहित्यिक-लेख तथा इन्टरव्यू भी लिखे ! हिन्दी की सभी पत्र-पत्रिकाओं में समय-समय पर प्रकाशन ! मध्य प्रदेश बुन्देलखण्ड, तथा उत्तर प्रदेश में होने वाले कवि-सम्मेलनों के लोक-प्रिय-कवि ! ग्वालियर मे निवास तथा म० प्र० की प्रतिनिधि-साहित्यिक-संस्था साहित्य-संघ के अध्यक्ष !

कविता उनके शब्दों में 'Part time job' अथवा 'hobby' नही, पवित्र कर्तव्य और जीवन का अभिन्न अग ! गौरवर्ण, प्रसन्नवदन तेईस वर्षीय सुन्दर युवक आनन्द मिश्र नई-पीढ़ी का वह नक्षत्र है जिसका प्रकाश हिन्दी की अमर थाती होगा

—प्रकाशक

सम्मतियाँ

कविवर डॉ० शिवमंगलसिंह 'सुमन' एम० ए० डी० लिट्

'श्री आनन्द मिश्र की रचनाएँ देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । रचनाओं में भाषा, भाव, व्यंजना, तीनों का सुन्दर समन्वय देखकर आश्चर्य होता है । कवि के स्वर्णिम-भविष्य के प्रति विश्वास भी जगता है । भाव-विह्वलता तथा मार्मिकता कवि के सहज विकास का अंग बन गई हैं, उसमें बनावट अथवा प्रयास-पटुता नहीं । इतनी छोटी आयु में साहित्य के मूल्यों की ऐसी परख वरेण्य है । मैं उदीयमान कवि के इस नवोन्मेषी विकास का हृदय से स्वागत करता हूँ और उसकी साधना की परिपूर्णता की कामना ।'

—शिवमंगलसिंह 'सुमन'

श्री सत्यनारायण पाण्डेय, अध्यक्ष संस्कृत-विभाग

सनातन धर्म कॉलेज, कानपुर

मैंने आनन्द जी की रचनाएँ पढ़ी और सुनी हैं, इनकी वाणी में बल है, भाषा में प्रवाह है, भावों में गहराई है और विचारों में संस्कृत-जीवन की ओजपूर्ण हुंकारें बोल रही हैं । सरस कल्पना की रंगीली तरंगें सबल उक्तियों में चमक उठी हैं ।

उन्नतोन्मुख कवि की भावुकता का रसास्वादन सहृदय-हृदयों में रस संचार करने मे उत्तरोत्तर सफल हो, यह मेरी कामना है ।

भविष्य में इस उदीयमान तरुण कवि से हमें बड़ी आशाएँ हैं ।

—सत्यनारायण पाण्डेय

शुभ-कामना

अखिल-भारतीय सेकसरिया पुरस्कार विजयिनी

कवियित्री श्रीमती राजकुमारी चौहान

चन्द्र - कान्ति सी चन्देरी की फहरे पुण्य-पताका,
चन्देरी के जौहर का गा उठे विश्व भर साका,
वह जौहर जिसने नारी की शक्ति-शिरा लहराही,
वह जौहर जिसने गौरव की गाथा हँस-हँस गाही,
इस जौहर का पूत-पर्व चमका बनकर असि-धारा,
वाणी की बज उठी वीणा, भावों ने जिसे सँवारा,
कवि की पावन-हुंकारों में भारत-रमणी खेली,
नारि-हृदय-गौरव-गरिमा ने संसृति की जय लेली,
'श्री आनन्द' अमन्द-कांति बन जग-कानन में फूलो,
कलित-कल्पना-पंखों से तुम क्षिति छोरों को छूलो,

झाँसी
२९-२-५६

शुभाकांक्षिणी
राजकुमारी चौहान

अनुक्रमणिका

विषय					पृष्ठ
प्रथम सर्ग	...	...	...	...	१
द्वितीय सर्ग	...	...	...	...	६
तृतीय सर्ग	...	...	...	...	१२
चतुर्थ सर्ग	...	...	...	...	१७
पंचम सर्ग	...	...	...	...	२१
षष्ठम सर्ग	...	...	...	...	२४

चित्र-सूची

सं०				पृष्ठ के सम्मुख
१. कीर्ति-दुर्ग	...	...	...	६
२. जौहर-शिला-लेख	...	...	...	१२
३. दुर्ग से चन्देरी नगर का एक दृश्य	...	...	...	१७
४. जौहर-तलैया	...	...	...	२१
५. सती-स्मारक, कीर्ति-दुर्ग	...	...	...	२४

चँदेरी का जौहर

प्रथम सर्ग

दिन डूब चुका, ढल चुकी साँझ, हो गई रात,
झर उठा व्योम-से स्याही-सा तम का प्रपात,
नभ - उपवन के जो थे फूले - फूले - पाटल,
उन पर पतझर ने डाल दिया काला-आँचल,
हो गया चराचर में नीरवता का शासन,
उन्मन नभ, उन्मन धरा, स्याह कण-कण उन्मन,
सम्पूर्ण - विश्व तन्द्रा में खोया - खोया है,
पत्ता-पत्ता वन - का ज्यों सोया - सोया है,
कर चुका घना - शैथिल्य, विश्व भर को आवृत,
बस एक शून्य, निस्तब्ध-मौन दिखता जाग्रत,
पर नहीं, दूर, वह ऊर्ध्व - दुर्ग-का वातायन,
दुर्भेद्य, सुदृढ़, सिर तानेजो छू रहा गगन,

घेरे है जिसे चतुर्दिक बीहड़ दुर्गम - वन,
मानव से, मानव के प्रदंभ का संरक्षण,
उस वातायन में स्वस्थ, शक्त, दृढ़, भीमकाय,
अपलक-दृग, चिंतित से अधिपति मेदिनीराय,
पौरुष की अनुपम कांति लुटाता अंग-अंग,
वीरत्व-दीप्ति, गौरव की आभा फूट संग—
विस्मित कर देती, मुख निहारले जो पलभर,
ग्रीबा सुडौल, पाषाण - वक्ष, मुख-छबि-सुन्दर,

धक-धक, दो वृहत्-हीरकों के सम गोल - नयन,
प्रश्रवित ज्योति जिनसे, मानौ तम-हरण-किरण,
मांसल-मुख-आकृति, गरिमामय उन्नत - ललाट,
क्लिच्छुरित - केश, मनहारी जिनकी काट-छाँट,
गड़ रहे नयन, दूरस्थ, व्यस्त, चिंता-निमग्न,
आलस न लेष, हो गई सदा को सुप्ति भग्न,
आ रहे विचारों के दल के दल वेगवान,
नृप सोच रहे थे, "क्या होगा भवितव्य ? म्लान,
राणा - साँगा से वीर, निडर - योद्धा हारे,
चढ़ चुके भेंट रणचण्डी की कितने तारे,
बढ़ती ही आती है बाबर की अतुल - सैन्य,
आता हो बढ़ता ज्यों स्वदेश का करुण-दैन्य,
वह है विशाल-वाहिनी, और ये कुछ सहस्त्र,
देकर भी प्राण, बचा पाएंगे पूत - छत्र ?
दुर्भाग्य, दशा कैसी है ! आँखें भर आई,
लोहू के प्यासे देख रहा भाई - भाई,
सब मान, शील, मर्यादा, लज्जा, स्वाभिमान,
पद की लोलुपता, विभव - पगों में पड़े, म्लान,
परिवार एक था जो, वह है अब दूर - दूर,
बँट गई शक्ति, हो रही कामना चूर-चूर,
समता, समवेदन नहीं, हृदय में है कटुता,
बस इसीलिए अनुभव होती यह दुर्बलता,
सब होते एक अगर, फिर मुझको किसका भय ?
उठता ललकार, भले आती साकार-प्रलय,

बढ़ता जाता था सतत विचारों का प्रवाह,
कढ़ आती थी बरबस अधरों से क्षीण आह,

नृप दाब रहे थे यथासाध्य मन का विषाद,
पर होता जाता और उग्र - अन्तर - निनाद,

"क्या होगा इन अबोध-शिशुओं का हाय हन्त !
जो देख न पाये अभी नयन भरकर बसन्त,
ये नन्हें - नन्हें नयनों के उजियारे जो,
माँ की ममता के धोये हुये दुलारे जो,
जिन पर तलवार टूटने में शरमायेगी,
आँखों में पानी भरे मृत्यु दुलरायेगी,
यह वधू कि जिसका कल सुहाग सरसाया है,
पहला-बसन्त जिसकी बगिया में आया है,
जिसके हाथों की मेंहदी है अब तक गीली,
आँखें न उठ सकीं हैं पल भर को शरमीली,
होगी सुहाग की रात, मृत्यु की रात इसे ?
ज्वालाओं - सी धू-धू पहली - बरसात इसे ?
कोमल है छुई-मुई-सा जिसका नव-यौवन,
छूटा न ब्याह का अभी करों तक से कंकण,
वह सद्यस्फुट - कलिका, जौहर-व्रत धारेगी ?
अपने हाथों ये हीरक - हार उतारेगी ?
मुसकाने से पहले मधुबन मुरझायेगा ?
प्रासाद अधूरा मिट्टी में मिल जाएगा ?
लहलहा रही है, यह खेती जल जायेगी ?
दुर्भाग्य - निशा, अँधियारी होती जायेगी ?
आवश्यकता भू को लोहू की लाली की,
क्या बुझा न पाऊँगा मैं तृषा कराली की ?
क्या यह सब कुछ मैं आँख मूँद कर सह लूँगा ?
इस पशुता की धारा में कैसे बह लूँगा ?
क्या मिट्टी में मिल जाये संचित - स्वाभिमान ?
जीवन का मोह करूँ तजकर अनमोल-आन ?

क्या शीष झुकेगा बैरी सम्मुख ? नहीं ! नहीं !
कर सकूँ क्षुधा मैं शान्त मृत्यु की स्वयं कहीं ?
यह प्रजा जिसे सन्तान - सदृश मैंने पाला,
झुलसाये इसको तोपों की भीषण - ज्वाला !
पहले मेरा ही शीष कटेगा तब इनका
मैं जीवित हूँ तब तक न शत्रु का है तिनका",

बँध गई मुठ्ठियाँ, फूल गई चौड़ी - छाती,
जल उठी रोष की नयनों में रक्तिम-बाती,

"आने दो, जो आता है, मैं ललकारूँगा,
अपनी असि से बैरी का गर्व उतारूँगा,
रण होगा, पट जाये लोथों से शुष्क - मही,
जब होना है, तो हो जाने दो, यही सही,
भयभीत न होता कभी मृत्यु से राजपूत,
है मृत्यु उसे वरदान, और रण वरद् - दूत",

हो उठे मृत्यु का नृत्य देखने नृप - विह्वल,
नथुने फड़के, काँपे भुजदण्ड, पुष्ट, चंचल,

"अपनी मिट्टी से और अधिक क्या है पावन ?
हैं इसे समर्पित जन्म-जन्म यह तन, मन, धन,"

बीती विभावरी, उधर पलक झप सके न पल,
अन्तर में होती रही रात भर उथल-पुथल,
तम ढला, उषा ने ली प्राची में अँगड़ाई,
कितनी लाली यह अरुण-दृगों में भर लाई,

यौवन के मद का भार लिए पलकें बोझिल,
उलझे लहराती - अलकों में कितने शतदल,
मचले केशर के रेशों - से मनहर-कुन्तल,
चू पड़ा ओस बन अंगों से ममता का जल,

अंकुर - अंकुर हो गया पुलक भू का प्रमुदित,
मुकुलित डाली-डाली, विहगावलियाँ मुखरित,
है उधर दृगों में मधु-उत्सव का-सा गुलाल,
आधिक्य रोष का इधर दृगों में लाल - लाल,

जन-पथ की चुप्पीढली, भर गया कोलाहल,
जड़वत् कण-कण से खेल उठी हलचल चंचल,
चौंके नृप, विचलित-चित्त एक पल को सँभला,
कौंधी करुणा के मेघों में साहस - चपला,
बह उठा भोर का शीतल, मन्द, सुगंध, पवन,
मन हुआ शान्त, सागर मन्थन के बाद प्रमन,
वृत्तियाँ स्थिर रग-रग हो जैसे अब चेतन,
ठहरा पल भर को अमित - विचारों का मंथन,
कर्तव्य सोच अपना वे राजभवन आये,
सब वीर सचिव, सामंत, सभासद् बुलवाये,
बतलाया नृप ने उन सबको अपना निश्चय,
जीवन देकर भी राष्ट्र-धर्म हो पाय न क्षय,
इसलिये सजाओ सैन्य, और सामना करो,
मरते तो सब हैं, पर तुम अपनी मौत मरो।

भिजवाया गया पड़ौसी - सरदारों को रण का आमन्त्रण,
आरम्भ हो गई साका की तैयारी घर-घर में तत्क्षण,
रण-की उमंग में अब तत्पर जैसे चन्देरी का तृण-तृण,
जोहता बाट हो, कब आये यह मनचाहा - मनभाया क्षण,

द्वितीय सर्ग

लहराती हुई प्रकृति की वेणी-सी ललाम,
कल-कल, छल-छल, मधु-रव में गाती गान-साम,
'बेतवा' और 'उर' सरिताओं से तीन ओर—
जो घिरा हुआ, अपनी महानता में विभोर,
है चौथी ओर अचल-श्रेणी-विंध्याचल की,
करती संरक्षण, प्रथम-कसौटी अरि-बल की,
प्रच्छायित चारों ओर सघन-बन बियाबान,
झुरमुट-पलाश के धरती पर ताने वितान,
धौ, साज, खैर, सेजा, कारी, मोखा, जाँचर,
औ, केम, गुंज, घाटा, सालर, थूहर-तरुवर,
यह वृक्ष-कतारें तन्तुवाय के जाले-सीं,
अरि के तन-मन में चुभते हुवे कसाले-सीं,
ऊँचे-पहाड़-से झर-झर-झर झरते निर्झर,
'चन्देरी' नगर, प्राकृतिक-सुषमाओं का घर,
जो सात-दीर्घ-परकोटों से दृढ़-संरक्षित,
है बीचौबीच शृंग पर 'कीर्ति-दुर्ग' शोभित,

'राणा-साँगा' से जीत 'खानवा' का संगर,
चढ़ आया सेना लिए 'चँदेरी' पर 'बाबर'
डाला पड़ाव, रच चक्रव्यूह वर्तुलाकार,
पंक्तियाँ तम्बुओं की, न सैन्य का वार-पार,
आभास हुआ पर उसे, विजय कितनी दुष्कर,
ये सरिताएँ, पहाड़, ये सात-कोट दृढ़तर,

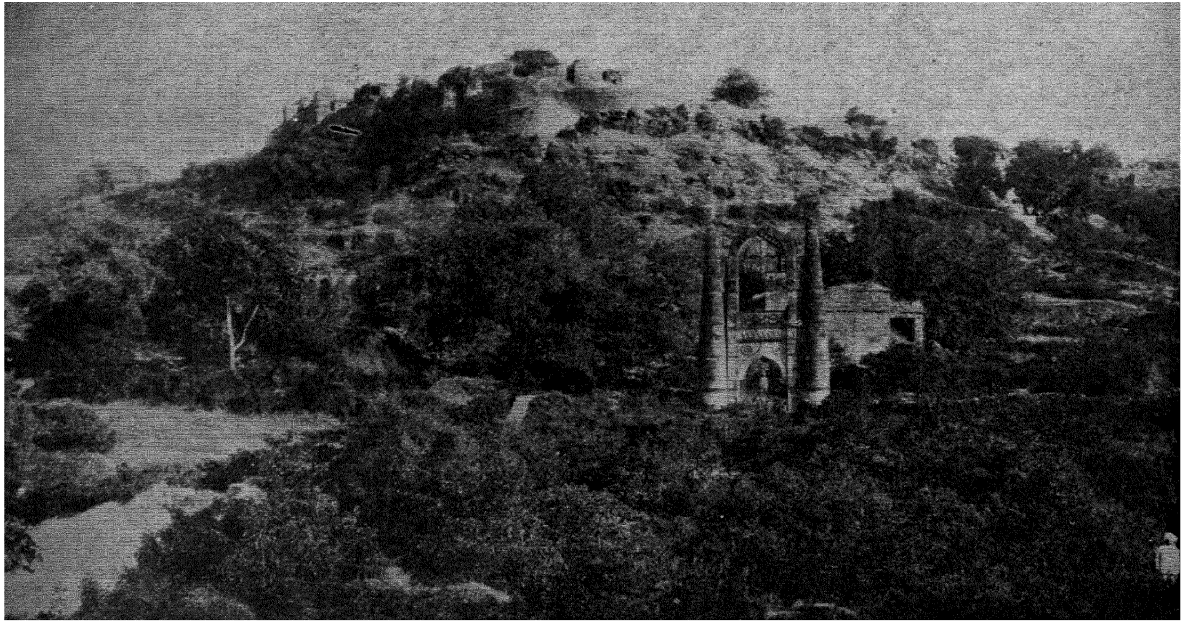

कीर्ति-दुर्ग, चन्देरी (मध्य प्रदेश)

वह सोच रहा था यदि करता हूँ नदी पार,
गोली-गोलों की गोलाबारी धुँआधार
सामना बिना ही मरते जाएँगे जवान,
आसान नहीं है विजय उसे हो चला ज्ञान,
है चौथी ओर कवच-सा यह ऊँचा पहाड़,
गढ़ से विष-बुझे शरों की आती हुई बाढ़,
कर देगी पलक-झपकते सेना क्षार-क्षार
हम झेल सकेंगे वह अदृष्य-भीषण-प्रहार ?
औ' पलट जाएगा अबतक के श्रम का पाँसा,
मिट्टी में मिल जाएगी मेरी सब आशा,
रह-रहकर यही बात मन को थी रही साल,
आ गई समझ में राजनीति की एक चाल,
"भिजवाऊँ मैं क्यों नहीं एक बस संधि-पत्र !
झुक जाए बिना युद्ध चरणों में काश ! छत्र !
आसान विजय की इससे अच्छी राह नहीं,
लड़कर आई इस बार पराजय हाथ कहीं ?
फिर थकी हुई पिछले रण की मेरी सेना,
मुश्किल है अडिग-पहाड़ों से टक्कर लेना,
फिर सौ-सौ के समान ये दुश्मन एक-एक,
मर जाते हैं, मुख पर रुदन की क्षीण-रेख,
जीवन दे देना जैसे इनकी बनी टेव,
घोषणा कहर की ही ज्यों हर-हर-महादेव,
इस कठिनाई से तो अच्छा है सन्धि-पन्थ,
भिजवाया जाऐ सन्देशा गढ़ को तुरन्त,
स्वीकार सन्धि हो, बिना लड़े मिल जाऐ जय,
हो अस्वीकार अगर तो भिड़ना है निश्चय,"
बुलवाए गए कुशल, बलशाली दो जवान,
'शेख-गुरेन' और 'आरायश खाँ' पठान,

भिजवाए गए सँदेशा लेकर शीघ्र दूत,
अन्तर भावी-आशंकायें था रहा कूत,

थे उधर शाण पर चढ़े हुए सब अस्त्र-शस्त्र,
तैयारी रण की दृढ़ से दृढ़तर थी अजस्त्र,
पहुँचा गढ़ के दरवाजे पर जब संधि-पत्र,
मेदिनीराय कर रहे निरीक्षण यत्र-तत्र,
तोपों का भार सँभाल रही दीवारें थीं,
मुख खोले चलने को तैयार कतारें थीं,
चौकियाँ बनीं, सब द्वार नगर के हुए बन्द,
मुँद गई सभी परकोटों की प्रत्येक संध,
इस तरह युद्ध की अब पूरी तैयारी थी,
बस एक जूझ पड़ने की बाकी बारी थी,
इतने में आया दौड़ा सैनिक-राजपूत,
संदेश दिया, अरि ने भेजा है सन्धि-दूत,
मेदिनीराय चौंके, परन्तु फिर कुछ सँभले,
आनन के भाव क्रुद्ध से सौम्य हुए बदले,

बोले 'तुम सादर सभा भवन में लाओ,
मैं आता हूँ, तबतक दरबार सजाओ',

दरबार सजा, थे यथास्थान सब राजपूत,
बुलवाए गए सँदेशा-वाहक, शत्रु-दूत,
मेदिनीराय आसीन स्वर्ण-सिंहासन पर,
दो ओर पंक्तियों में केहरि-दल, वीर-प्रवर,
मन्त्री ने होकर खड़े सुनाया सन्धि-पत्र,
स्वीकारो परतन्त्रता, गरल-सी एक शर्त,

चन्देरी देदो, लेलो शमशाबाद जिला,
यह एक प्रलोभन और साथ ही लिखा मिला,
नृप हँसे, खड़े हो गए, अधर-पुट फड़क उठे,
फूटा गुरु-स्वर, जैसे नभ-विद्युत कड़क उठे,
बोले "हम थोड़े हैं लेकिन स्वऽभिमानी हैं,
अवशिष्ट अभी तक इन आँखों में पानी है,
सिर दे सकते हैं, किन्तु नहीं देंगे माटी,
इस वीर-देश की है ऐसी ही परिपाटी,
निज मातृ-भूमि की रक्षा में कट मर जाना,
हमको ऐसे, जैसे मुँह माँगा वर पाना,
रह पराधीन, कल्पों का जीवन व्यर्थ जान,
स्वाधीन एक दिन का जीवन उससे महान,
हम जीवन को आदर्श मानकर जीते हैं,
हम हाला नहीं, सदैव हलाहल पीते हैं,
इस धमकी का किंचित् भी हमें नहीं है भय,
होगा रण में ही विजय-पराजय का निश्चय,
जबतक हममें से एक-एक भी जीवित है,
तबतक समझो यह दुर्ग पूर्ण संरक्षित है,
कह देना, मैं यह सन्धि-पत्र ठुकराता हूँ,
ले शीष हथेली पर अब रण में आता हूँ,
कहना, यह राजपूत की असि का है पानी,
मत सिंह छेड़ने की कर देना नादानी,
है पराधीन रहने से, मरना अधिक ठीक,
जाओ, हम देंगे युद्ध-भूमि में तुम्हें सीख",

फट पड़ा कि जैसे परिधि फोड़कर मौन-सिन्धु,
उन्नत-ललाट पर झलक उठे प्रश्वेद-बिन्दु,

सब साधु-साधु कह उठे समर्थन में स-रोष,
सम्पूर्ण-भवन में गूँज उठा यह महाघोष,
सन्देशा-वाहक, भय-विस्मित, कर नत-प्रणाम,
प्रत्युत्तर देने लौट चले सन्तप्त धाम,

पहुँचा सन्देशा, सन्धि - पत्र है अस्वीकार,
उत्तर, मानो सारी आशाओं पर तुषार,
फुफकार उठा 'बाबर', फन कुचला ज्यों कि नाग,
थी शक्ति, शक्ति का दर्प दृगों में उठा जाग,
"मन-बुद्धि, शक्ति के शासन में जब हों गुलाम,
समझो वह आदर्शोन्मुख - जीवन का विराम,
समझो पाशवता आज हुई पूरी जवान,
जीवन-रथ का तम के पथ पर समझो प्रयाण,
समझो कि सत्य पर टूट पड़ी है विषम-गाज,
समझो मनुष्यता का बिखरा है सकल-साज,
कैसी विडम्बना है, मानव मानव का घर,
अपने हाथों से जला रहा है हँस-हँस कर,
अपनी काया जैसी, हर मानव की काया,
हम हैं मनुष्य, तो वे भी कब केवल छाया,
अपने शिशुओं जैसे वे भी बालक प्यारे,
वे भी अपनी माताओं के दृग-उजियारे,
पर मृत्यु एक की क्यों दूजे को नहीं खली ?
धारा-करुणा की क्यों अन्तर से नहीं गली ?
जब क्षुद्र-स्वार्थ में मन अंधा हो जाता है,
सारा विवेक अन्तर्मन का खो जाता है,
तब मानव, मानव नहीं, कि वह तो दानव है,
प्रत्येक नीचतम्-कर्म उसे तब संभव है",

'बाबर', मनुष्य पर शासन का इच्छुक 'बाबर',
धन की लिप्सा में अन्ध, स्वार्थ-साधक 'बाबर',
बुलवाये उसने सेना के सब संचालक
जो देख रहे थे राह आज्ञा की अबतक,
बोला सुल्तान "चलो, तोपों का मुँह फेरो,
कल हमला होगा, चारों ओर दुर्ग घेरो",

भिजवाए गए गुप्तचर चारों ओर कुशल,
अध्ययन हुआ आरम्भ, शत्रु में कितना बल,
मिल गया एक घर-द्रोही-हिम्मत-राजपूत
माँ का सुहाग गिरवी रखने वाला सपूत,
घर का भेदी ही इस लंका को ढहा गया,
सारे अरमान स्वार्थ-धारा में बहा गया,
चल गया पता, थे एक ओर सब कोट शिथिल,
बस, उसी ओर लग गये दीर्घ तोपों के दल,
कर रही भोर की व्यग्र-प्रतीक्षा सेना अब,
भीषण-नृशंसता का नंगा-नर्तन हो कब।

तृतीय सर्ग

पौ फटी और तोपों ने उगले अनल-चक्र,
गोलों के पुंज चले गढ़ की दीवारों को,
पत्थर की छाती और कड़ी हो गई उधर,
टकराकर क्षार बनाती प्रबल-प्रहारों को,

गूंजा सारे वनप्रान्तर में यह विकट-घोष,
खग भूल गये उड़ना गर्जन से त्रस्त, भीत,
हिल गया शेष का फन जैसे, धरती डोली,
अम्बर का वेपथुमान गात होता प्रतीत,

गढ़ पर, पहाड़ियों पर, खेतों-खलिहानों पर,
अंगारों की बरसात, गये पत्थर पसीज,
रश्मियाँ भोर की उतर न पातीं सहज आज,
पट-वृहत् धूम्र का तना एक नभ-धरा बीच,

उत्तर में कड़क उठीं अब गढ़ से कड़ाबीन,
उद्घोषित हाहाकार चतुर्दिक् करुणामय,
पावस के कीटों - सा भूशायी नर-समूह,
स्मशान बना है पल में नन्दन-सा-आलय,

'बेतवा' और 'उर' नदियों के वन-खण्ड-विवृत,
सुलगे, अरि की सेना में अब खलबली मची,
है धूल कहाँ ? छल-छल लोहू की धार प्रबल,
बह चले अमित जिसमें मनुष्य-शव धजी-धजी,

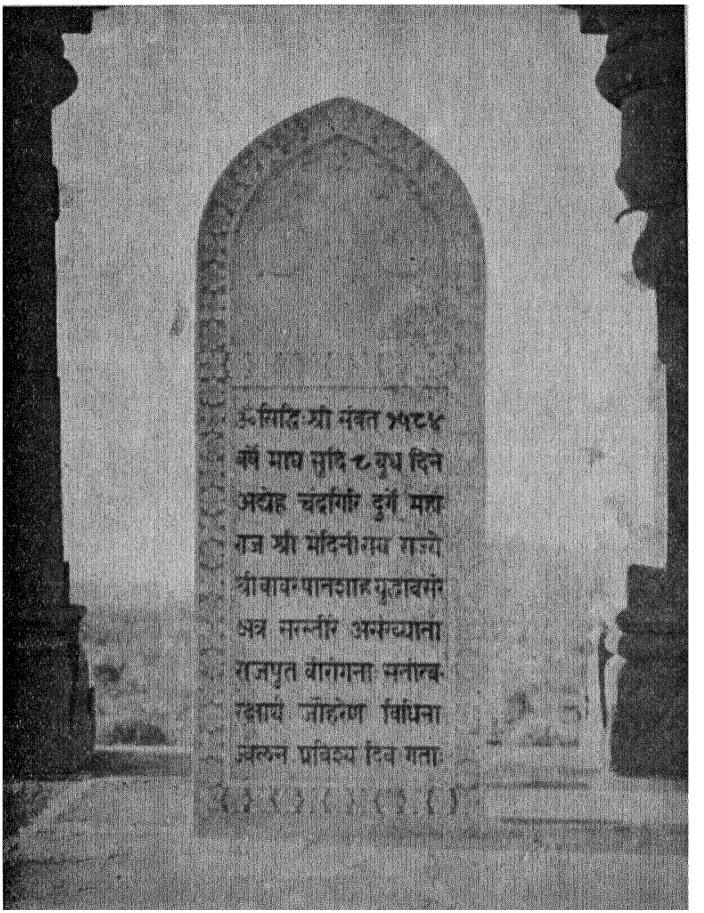

जौहर-शिला-लेख, चन्देरी

लहलहा रही थी कल जो हरी-भरी खेती,
कितना श्रम, शासन-विभव-तृषा में विपर्यस्त,
वे झाँझ, मँजीरे, ढफ, जीवन के मधुर-राग,
पशुता की क्षुद्र-लालसा में हो गये ग्रस्त,

कितना श्रम, कितनी जिज्ञासा से बनता है,
घर अपना, जिसको नर-पशुत्व है लूट रहा,
विस्मय-व्याकुल, विक्षुब्ध लेखनी काँप रही,
अन्तर-समवेदन आँसू बनकर फूट, बहा,

दिन भर तोपें अविराम उगलतीं रहीं आग,
ज्वालाओं की, लावा की बरखा धुँआधार,
अम्बर के आँसू सूख गए थे पथ में ही,
लोथों की गिनती होती जाती थी अपार,

लेकिन दिन भर की मार सहन हो नहीं सकी,
ढह गऐ एक के बाद एक सब जीर्ण-कोट,
दल के दल निकले रण-उत्कट-प्रच्छन्न-वीर,
कसमसा रहे उनकी जो अबतक लिये ओट,

लपलपा उठीं असि, औ' भाले दमदमा उठे,
चमचमा उठीं, बर्छियाँ, कटारें, धनुष-बाण,
समवेत हो उठा हर-हर-बम का महोच्चार,
झलमला उठे वपु-कवच, लौह-कृत-शिरस्त्राण,

शंपाओ - के - नर्तन - सी कौंधी तलवारें,
रवि के यौवनमय आनन से दमके भाले,
करका - की - सी बौछार विष-बुझे तीरों की,
धाराओं में बह चले उछल शोणित-नाले,

तलवारें नौका बनीं उतरने भव - सागर,
बस एक आह में थी बहिश्त की खुली राह,
गूंजा दम घुटने की चीखों से आसमान,
प्रतिध्वनित चतुर्दिक, हाय हाय, कर्कश-कराह,

प्राणों की बाजी लगा, देश की रक्षा में,
—लड़ने वाले वे वीर, अभय-गज मतवाले,
थे काट-काट कर पाट रहे धरती-घाटी,
काली का तृषित - रिक्त - खप्पर भरने वाले,

यमदूत बने से झपट रहे अरि - सेना पर,
कूदने - नाचते थे, निर्भय पिल पड़ते थे,
कैसी विचित्र तन्मयता थी, रण - कौशल था,
कट गऐ शीष थे, और रुण्ड चल पड़ते थे,

मेदिनीराय आसीन अश्व पर यम से ही,
दो - दो - तलवारें नागिन - सी फुफकार रहीं,
दौनों कर थे अविराम, अथक चलते जाते,
डँस लिया जिसे उसने न तनिक भी आह कही,

रवि - सा विदारते अरि की सेना के तम को,
देते जाते थे वीरों को उत्साह नया,
घोड़ा था या वह था प्रतिरूप पवन का ही,
इंगित भी करना नहीं पड़ा, वह गया, गया,

दाबे दांतों में रास अश्व की, रण - उन्मद,
जिस ओर टूटते, काई - सी फट जाती थी,
वे एक हाथ में पाँच साफ कर देते थे,
बिजली गिरती थी, तरु - डालें छट जाती थीं,

हटते जाते थे राजपूत लेकिन पीछे,
इसलिए कि अरि की सेना की संख्या अतुलित,
वे सागर से लहलहा रहे चारों दिशि में,
ये तैर रहीं नौकाओं से उसमें सीमित,

हो गई साँझ, रण स्थगित हो गया अब कल को,
दोनों सेनाएं लौट गईं अपने डेरे,
मरघट की क्षुब्ध-उदासी थी अब शेष रही,
लग उठे बुभुक्षित-श्वानों के अब थे फेरे,

था गूँज उठा स्वर 'हुआ' शृगालों का कर्कश,
झींगुर की झन-झन, झिल्ली की झनकार प्रखर,
लोथों के टीलों पर रश्मियाँ उतरती थीं,
रश्मियाँ नहीं, नभ के लोहित-आँसू की झर,

मँडराते गीध, लहू बरसाता लाल-व्योम,
धरती पर माँस-रक्त की कींच भरी भारी,
था एक और स्वर दबा हुआ - सा इन सब में,
जो कुछ थे जीवित, वह उनकी थी सिसकारी,

थी साँझ कि या लोहू से लथपथ मृत्यु स्वयं
जो देख रही कर अट्टहास अपना तर्पण,
अम्बार शवों के, बिखरे रजकण-से अवयव,
अभिषाप मनुजता का सबसे भीषण है रण।

मेदिनीराय अब और अधिक चिंतानिमग्न,
भीषण-जनहानि हुई थी उनकी सेना की,
वे देख रहे थे हार अवश्यंभावी है,
अधिकांश खेत हो चुके, गिने से हैं बाकी,

पर क्या भय है, अन्तिम-साका को हम तत्पर,
निर्वाण-पर्व होगा कल का रण, निश्चय है,
"जो जीवित ही मर गया, पराजय उसकी है,
जो मर कर भी जीवित है, उसकी तो जय है",

"चिंता है अपनी नहीं मुझे, ये भोले शिशु,
जीवन की परिधि कि जो केवल छू पाए हैं,
ये बालायें, लहलहा रहीं जिनकी साधें,
कुसमय इन कलियों पर पतझर मँडराए हैं",

आ गई याद उनको सहसा 'मणिमाला' की,
रूँध गया कंठ, भर आए अनचाहे युग-दृग,
उत्साह-मिलन का फीका-फीका-सा, उदास,
सामने प्रिया-प्रासाद, किन्तु योजना-सा मग,

"कैसे आदेश दे सकूंगा इन कलियों को,
'चूमो अंगार अधर की भरी-जवानी में,
कैसे फाड़ूँ मैं पृथम - पृष्ठ उस पुस्तक के—
भूमिका लिखी है जिस पर तुतली-वाणी में",

खिंच चले सहज आकर्षणवत, श्लथचरण-चुम्म,
टूटा-टूटा सा तीर पहुँच कर अब संयम,
फौलादी-बाण न बेध सके थे जिस मन को,
हो गया क्षार ममता के लघु-तृण से निर्मम,

गोलों की बरखा में जो धीरज नहीं गला,
अपनों के आँसू उस धीरज को गला गए,
जो वृक्ष आँधियों से न तनिक भी डिग पाया,
करुणा के झोंके उस तरुवर को हिला गए।

दुर्ग से चन्देरी नगर का एक दृश्य

चतुर्थ सर्ग

वह कौन ! चाँद की प्रतिद्वंदिनि-सी ज्योतिवान,
हैं दूर खड़ी प्रासाद-कक्ष में चकाचौंध,
घुँघरारी-अलकों के घेरे-से टूट, बिखर,
सौ-सौ बिजली जिसके आनन से रही कौंध,

मचले कुंतल, मेघों की होड़ाहोड़ी-से,
थक गए किन्तु किरणें न बाँधने पाते हैं,
झुंझलाते हैं असफल-प्रयास पर बार-बार,
बढ़ते हैं लेकिन हार मान हट जाते हैं,

दो, अरुण-कमल-से अमल, लोल. लोहित-लोचन.
पलकें प्रलम्ब, यौवन के मद का मधुर-भार,
सुषमा के जल से खेल रहीं दो चपल-मीन,
दो फल मँद रहे और खुल रहे बार-बार,

सब गहराई की थाह न लेने पाते हैं,
गहराई उन आँखों की थाह न ले पाती,
जिनमें सागर के सागर समा रहे ऐसी--
—दो प्यालीं ले ले कर उफान ढुल-ढुल जातीं,

'मणिमाला' है, सचमुच मणियों की माला है,
अँधियारे उर का क्षय, अमित-उजाला है,
कोमल कलियों से, लेकिन पत्थर से कठोर,
पाशवता के मिस वह प्रलयंकर-ज्वाला है,

अप्सरा सेज पर है, तो रण में दुर्गा है,
वह सदा पली है अंगारों की छाया में,
आपत्ति-अनल के क्रूर-लपट-जालों में तप,
कितना आलोक समाया है उस काया में,

वह मेरे गरिमामय-भारत की नारी है,
उसने जीवन का इतना दर्शन जाना है,
जब माँग उठे लोहू की प्यासी धरती से,
बलि हो जाना, जीवन का मूल्य बढ़ाना है,

जब-जब माँ की ममता ने इसे पुकारा है,
माला में इसने हँसकर शीष पिरोया है,
उत्सर्ग-मूर्ति इस सहनशील वरदानी ने,
अपना सुहाग तक अपने हाथों खोया है,

जिस वाणी पर कोयल के गीत लजाते हैं,
उस वाणी में भेरियाँ गरजने लगतीं हैं,
जिन कोमल हाथों में बजती चूड़ियाँ मधुर,
उन हाथों में तलवारें खनकने लगतीं हैं,

मन में जो कभी ठान ले तो अपना सुहाग,
यह महाकाल से स्वयं छीन ले आती है,
युग के युग कुन्दन बने दमकते रहें सदा,
इतनी ज्वाला यह प्राणों में भर जाती है,

वह खड़ी हुई है प्रियतम की अगवानी में,
हो गई साँझ, अब वीर-प्रवर आते होंगे,
रण की थकान धो देगी उसकी सरल-हँसी,
सन्देश विजय का वे अपनी लाते होंगे

वे आये तो, लेकिन उदास से, खोये से,
वह ललक नहीं मिलने की, वह उत्साह नहीं,
पहचान गई अन्तरतम् का भीषण-प्रदाह,
उर धधक रहा, बस अधरों पर ही आह नहीं,

गह लिए युगल-कर उसने अपने हाथों में,
लोहू से लथपथ, हँस, विव्हल हो चूम लिए,
कितनी शीतलता थी इस भावुक चुम्बन में,
भू-नभ, तन-मन, सब कुछ तो पल भर झूम लिए,

बोली "क्या समाचार है प्रियतम संगर का,
लोथों में पाट दिया है तुमने कितना वन ?
कितनी खदेड़ आए हो सेना बैरी की ?
कितने लोहू से धोया है अपना आंगन,

कितनी तलवार तृषाकुल थी ! हो गई तृप्त !
सन्तोष मिला, कितना मन ऊला-ऊला था !
सचमुच लोहा तो मान गया होगा बैरी,
अपनी कायरता पर ही कितना फूला था !

बोलो, यह चुप्पी तो अब खलने लगी मुझे,
जो होनी है, उसको तो निश्चय होना है,
हम कर्म किए जायें, अपना कर्तव्य यही,
यह व्यर्थ भार चिंता का सिर पर ढोना है",

नृप सुनते थे, लेकिन विषाद की रेखायें--
--मुखपर गहरी से गहरी होती जाती थीं,
उत्तर को अधर खुले, पर वाणीं रुँधी हुई,
शब्दों की धारा रुक-रुक कर बह पाती थी,

"रानी ! यह तो सच है, हम निश्चय हारेंगे,
पर थके नहीं हैं, इतना ही कह सकते हैं,
हम हँसते-हँसते प्राण त्याग देंगे, लेकिन,
परतन्त्र सहीं जीवन पल भर सह सकते हैं,

मैं सोच चुका हूँ, अब अन्तिम-निर्णय होगा,
कल का रण हम सबका भीषण-साका होगा,
या तो बच्चा-बच्चा अपनी आहुति देगा,
या इस धरती का कल बदला खाका होगा ?

चिन्ता है अपनी मुझे तनिक भी नहीं प्राण !
लेकिन जो बेध रही है हृदय, तुम्हारी है,
इन बच्चों की, बालाओं की, इस धरती की,
आंखों के आगे उजड़ गई फुलवारी है,

दुख है अपना सर्वस्व लुटा भी कर न सका,
रक्षा स्वदेश की, इस अनमोल धरोहर की,
प्रारब्ध ! आज अस्तित्व तुम्हारा माना हूँ,
तुम साथ नहीं, तो कुंठित है क्षमता नर की,

रानी ! तैयारी हो सामूहिक-जौहर-की,
जीवन से ज्यादा मूल्यवान है स्वाभिमान,
इतिहास लिखा जाता साँसों का लोहू-से,
जीवन को जीवित करने, गाओ मृत्यु-गान",

मणिमाला सुनती रही अभय, हँस कर बोली,
"जौहर होगा, पग पीछे नहीं हटाएगी,
नारी इतिहास न लिखने देगी स्याही से,
वह आगे बढ़कर अपना लहू मिलाएगी"

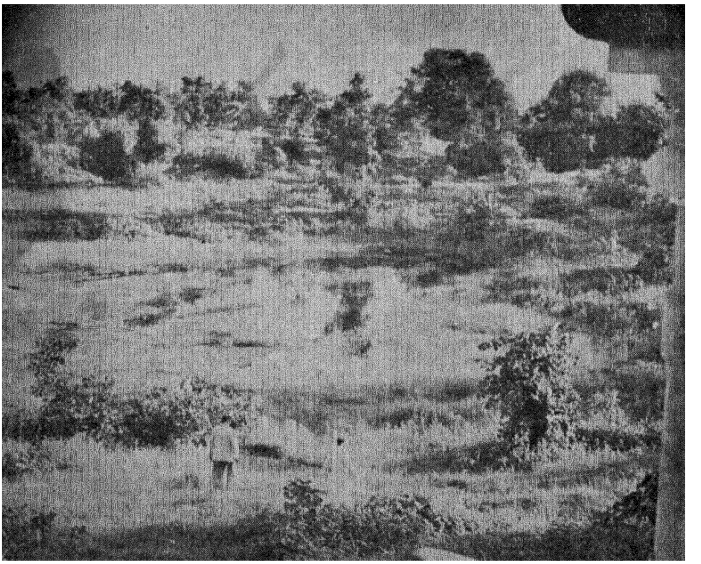

जौहर-तलैया, चन्देरी (मध्य प्रदेश)

पंचम सर्ग

हो गया सबेरा, नभ-से अरुण-किरण फूटीं,
संसृति आलोकित हुई, अँधेरा हुआ दूर,
हिमवान-समीरण, किन्तु न उसमें सौरभ है,
सड़ती-लोथों के गन्ध-भार से थकी, चूर,

पत्ते हिलते हैं, किन्तु न गाते गीत मधुर—
खग-दल, भयभीत छिपे हैं अपने नीड़ों में,
वे आँक रहे होंगे किंचित्, क्या अन्तर है,
इन नर-लोथों में, हम खाते उन कीड़ों में ?

गुँजरित प्रभाती नहीं भोर की वह प्रमुदित,
मर्सिया पढ़ा जाता हो जैसे मातम-का,
संतप्त, निखिल अग-जग का वातावरण, क्लांत,
करुणा-से गीला स्वर संसृति की सरगम का,

रणभेरी बजी, नगाड़े पर हो उठी चोट,
पहने केशरिया-बाना उतरे राजपूत,
माथे पर रक्त-तिलक, हाथों में नग्न-खड्ग,
उत्सर्ग-ललक, आनन की वह आभा अकूत,

कन्धों पर कसे निषंग, लटकते धनु कुंचित,
सब आज भयानक खेल खेलने आये हैं,
साँसों में है तूफान, हृदय में दावानल,
जीवन का अन्तिम-वार झेलने आये हैं,

गम्भीर - निनादित - तुमुल-घोष रणतूलों का,
स्वर का प्रवाह, उत्साह-वर्धना वीरों की,
उद्वेलित-साँसें, लड़ जाने को आकुल-सी,
वह सिंह - वाहिनी मेधावी - रणधीरों की,

भिड़ गया दुर्ग से उतर सैन्यदल-रोषवान,
हरएकलिंग, हर - महादेव, हर-हर-शंकर,
अल्ला हो - अकबर के नारों से गूँज गऐ,
नगरी, घाटी, सरिता, वन-उपवन, गिरि-गह्वर,

तलवारों पर तलवारें टूटीं, भालों पर—
—टूटे भाले, प्रत्यंचा की टंकार हुई,
चीरते पवन की काया तीर चले सन - सन,
मारो - काटो की कर्ण - भेद हुँकार हुई,

पागल-क्रोधित-गज रौंद चले जैसे वन को,
ऐसे नर - लोथें रौंद चले वे सेनानी,
भय था न मरण का मन में कणभर शेष रहा,
अभिषापी - मृत्यु उन्हें बन आई वरदानी,

पीछे हटते जाते थे, लड़ते जाते थे,
गिरते जाते थे, उठकर भिड़ते जाते थे,
कट सकता था लेकिन झुक सकता नहीं शीष—
छाती ताने अरि - दल पर चढ़ते जाते थे,

खूनी - दरवाज़ा लाल हुआ,
रण और अधिक विकराल हुआ,

वह एक शीष बलि करता था,
पर कई साथ ले मरता था,

संख्या थोड़ी होती जाती थी अब क्रमशः,
लेकिन उत्साह न मन का थकने पाता था,
वे जूझ रहे नश्वर-जीवन का मोह छोड़,
अरि-दल तक विस्मय से अवाक् रह जाता था,

चढ़ गया विहँस प्रत्येक वीर बलिवेदी पर,
जितने थे युवक, सभी ने हँसकर दिये प्राण,
जो थे किशोर, वे भी चण्डी की भेंट चढ़े,
रेखें न भींग पाई, कर डाले शीष दान,

मेदिनीराय लड़ते-लड़ते भू-शयी हुऐ,
रिपु-दल का जय-उद्घोष चतुर्दिक व्याप्त हुआ,
सब कहें पराजित राजपूत, मैं कहता हूँ,
वे सदा जयी, भीषण-नरमेध समाप्त हुआ।

षष्ठम सर्ग

नारा थीं तुम, किन्तु लजाये पौरुष ऐसी नारी,
युगों-युगों तक जीवन के पथ की अनुपम उजियारी,
मृत्यु वरी, लेकिन जीवन को लज्जित करना तुम्हें न भाया,
अंगारों की छाया में भी तुमने मुक्ति-गान दुहराया,
तुम जो ज्वाला जला गई हो, जलती रहे सनातन,
श्रद्धा - नत करता है मेरा मन तुमको अभिवादन !

पहुँचा सन्देशा करुण-पराजय का गढ़ में,
सुनकर हँसदी मणिमाला, वह क्षत्राणी थी,
कितना लोहू बह चुका जलाने जिसे सहज,
उसको उस दीपक की बाती उकसानी थी,

चन्दन - खण्डों से रचो हुई जल उठी चिता,
हरहरा उठीं लपटें भीषण, निर्धूम-ज्वाल,
शत-शत जिव्हाऐं लहराई ज्यों दुर्गा की,
मुख खोल - खोल फुफकारे या अनगिनत-व्याल,

सब एकत्रित हो गई चिता के आस-पास,
वृद्धाऐं, जिनकी डाली के झर चुके पात,
प्रौढ़ाऐं जिनको पतझर का हो चुका भास,
बालाऐं जिसके जीवन का है नया-प्रात,

वे भी जिनकी साधों की कलियाँ सूख चुकीं,
वे भी जिनकी साधों की कलियाँ खिलीं नहीं,
वे भी जिनकी लहरों ने चन्दा चूम लिया,
वे भी जिनकी लहरें जी भर कर हिलीं नहीं,

सती-स्मारक, कीर्ति-दुर्ग, चन्देरी (मध्य प्रदेश)

बोली मणिमाला, "ओ मेरी सहगामिनियो !
तुम सबकी आज परीक्षा का दिन आया है,
सकुचोगी, या हँसकर प्राणों की बलि दोगी !
बोलो, अब नहीं विलंब, अमर - क्षण आया है

चूमो हँसकर चन्दन की सुरभित - लपटों को,
हो जाओ अमर, बनो नक्षत्रों की माला,
जल जाने दो जो कुछ नश्वर, जल जाने दो,
जो अमिट, उसे करने दो भू-पर उजियाला,

क्या है जीवन में मान नहीं, यदि आन नहीं !
आदर्श नहीं, बलिदान नहीं, जीवन पशुवत्,
इन सबकी रक्षा करता जो मिट जाता है,
उसकी गरिमा के सम्मुख सकल-चराचर नत,

बोलो, अपनी महानतम - लज्जा बेचोगी !
या मृत्यु वरोगी ऐसी, जीवन से महान !
बोलो, इतिहासों में कलंक कहलाओगी !
या पथ-प्रशस्त कर जाओगी दे प्राण-दान !"

भावना और कर्तव्यद्वन्द्व हो गया प्रबल,
सबकी आँखें भविष्य के भय से गीली हैं,
लेकिन कर्तव्य हुआ विजयी, साहस उभरा,
भावना सदा कर्तव्य समक्ष लजीली है,

सब आत्माहुति के लिये हो गईं अब तत्पर,
निस्स्नेह-मन के सारे भय थे हो चुके क्षार,
उठ गये चिता की ओर सरलता से सब डग,
फूलों से दिये दिखाई वे धक-धक अँगार,

लेकिन मणिमाला सोच रही कुछ और अभी,
चिन्ता की रेखाऐं ललाट पर काँप रहीं,
विस्फारित - दृग भटके - भटके तकते सुदूर,
साँसें समीर - सीं चलते-चलते हाँफ रहीं,

"है एक और कर्तव्य अभी भीषण बाकी,
यह जो सुमनों-से शिशु-अबोध रह गये शेष,
क्या म्लेच्छ बनाये जाऐंगे जोवित, बलात् ?
परिवर्तित होगा धर्म, नहीं सन्देह लेष,

छाती पर रक्खे हुए गुलामी का बोझा,
ये जीवन के पहाड़-से-दिवस बिताऐंगे !
मर जाएगी इनकी लज्जा, अभिमान, आन,
ये धरती की छाती के दाग़ कहाऐंगे !"

उसका मन बोला, इनकी भी दे हवि सहर्ष,
फिर कूद चिता की लपटों में, कर देह स्वाह,
आदेश दिया "वध होगा पहले शिशुओं का",
सब चीख उठी, अधरों से बरबस कढ़ी आह,

आँखों से सहसा बरस पड़े सौ-सौ सावन,
मुख पर विषाद की दौड़ गई काली-छाया,
चीत्कार कर उठा रोम-रोम आकुल-तन-का,
अवरुद्ध गिरा, जड़ कण्ठ, चेतनाहत-काया,

कुछ बोलीं "रानी ! क्या पर्याप्त नहीं होगा—
हम सबका लहू धरा की प्यास बुझाने को ?
इतने नरमुण्डों-की-माला क्या नहीं पूर्ण—
रणचण्डी-की ग्रीवा में हार सजाने को ?

टूटे न दूध के दाँत अभी तक हैं जिनके,
संसार जिन्हें अबतक केवल कौतूहल है,
जीवन की साधें जिन्हें अभीतक स्वप्न रहीं,
जिनकी छाया अबतक ममता का आँचल है,

हम सब तत्पर हैं अपना सबकुछ बलि देने,
रानी ! इनको जीने दो, दे दो क्षमा-दान,
स्वीकार करो हम सब का करुण-निवेदन यह,
इनकी सांसों का मत मैटो दैवी-विधान'',

लेकिन, वह दुर्गा तो पागल, मस्तानी थी,
ले खड्ग हाथ में कूद पड़ी युग-नयन मूंद,
अनुकरण किया सबने छाती पर रख पत्थर,
सूखे लोचन, अवशिष्ट अश्रु की नहीं बूंद,

बहनों ने काटे प्राणों से प्यारे भाई,
माताओं ने पुत्रों के शीष उतार दिए,
बलिहारी भारत ! और कौन - सा देश जहाँ,
ऐसी माताओं-बहनों ने अवतार लिए ?

कल्पना नहीं कर पाता मैं इस आहुति की,
इतना कोमल-मन, हो सकता इतना कठोर ?
जिनकी आँखों में अश्रु देख फटती छाती,
उनका वध ! इन हाथों से ! हो इतनी विभोर ?

चीखने लगे खग, बौराए उड़ चले विकल,
मुख छिपा लिया सूरज तक ने करुणा-घन में,
रो उठी वायु सिसकी ले-ले, रो उठीं दिशा,
रो उठा स्वयं बलिदान, आज कृतकृत्य हुआ,

उपनिषद् रो उठे, पृष्ठ रो उठे गीता के,
रो उठीं आयतें थीं क़ुरान की ढाह-मार,
रो उठा धर्म, इतिहासों के रो उठे नयन,
दर्शन, साहित्य, कला के उमड़ी अश्रु-धार,

ऐसा उत्सर्ग न हुआ, न होना है सम्भव,
किससे तुलना कर सकूँ, तुम्हारी कल्याणी,
तुममें परिभाषा पूर्ण हो गई साहस की,
पौरुष का श्रोत, ज्योति का आगर वरदानी,

फिर एक-एक कूदीं ज्वाला में पूर्ण-प्रमन,
लपटें बढ़ चलीं, गगन छूता-सा अनल-जाल,
चटचटा उठीं अस्थियाँ, चर्म की प्रखर-गन्ध,
लोहित-लपटों के पुंज-पुंज उड़ते अराल,

आगया एक झोंका बयार का, तरुओं-का—
—पत्ता-पत्ता टूटा सँग-सँग जल जाने को,
अभिवादन में नत-शीष हो गया वृक्ष-वृक्ष,
पत्थर-पत्थर गढ़ का आकुल गल जाने को,

तुम मरीं अगर तो धर्म मर गया, कला मरी !
तुम मरी अगर तो स्वयं मर गई मानवता !
तुम चिर-जीवित भारत के अन्तर-अन्तर में,
नक्षत्रों में खिल, बरसातीं प्रतिदिन ममता ।

लेखनी आज कृतकृत्य हुई,
तुम मरकर मर्त्य, अमर्त्य हुईं,
मानव-पग-पथ का शोध हुईं,
जीवन का अमर-प्रबोध हुईं,

इतिहासों का अपवाद हुईं,
जीवन-क्यारी की खाद हुईं,
चिर-दीप्तिमान तब है वसुधा,
तुम बनी सहास कि जब समिधा,
तुमसे आलोकित प्रति-रज-कण,
स्वीकारो शत-शत-अभिनन्दन।

हमारा अन्य अनुपम काव्य-साहित्य

दर्द दिया है (प्रसिद्ध कवि नीरज जी की नई कविताएँ)	'नीरज'	४.००
आंखों में (शृङ्गार रस काव्य)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	२.२५
रूप-दर्शन (सचित्र सरल कविताएँ) (पुरस्कृत)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	६.००
वन्दना के बोल (गांधी जी पर कविताएँ) (पुरस्कृत)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	२.२५
बलिपथ के गीत (पुरस्कृत)	जगन्नाथ प्रसाद 'मिलिन्द'	३.००
रावण महाकाव्य (पुरस्कृत)	हरदयालुसिंह वर्मा	५.००
गीत-गोविन्द (सचित्र पद्यानुवाद) (पुरस्कृत)	विनयमोहन शर्मा	५.००
काव्य-धारा (संकलित कविताएँ)	डॉ. इन्द्रनाथ मदान	३.५०
मधु-संचय (संकलित कविताएँ)	बालकृष्ण राव	२.५०
प्राणोत्सर्ग (चार वीरांगनाओं की काव्य-गाथाएँ)	देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'	१.२५
काव्य-धारा (कविताएँ)	शिवदानसिंह चौहान-गोपालकृष्ण कौल	६.००
प्रथम सुमन (कविता संग्रह)	सत्यवती शर्मा	१.००
कदम-कदम बढ़ाए जा (वीर रस पूर्ण खण्डकाव्य)	गोपालप्रसाद व्यास	१.२५
अजी सुनो···! (सचित्र हास्य रस कविताएँ)	गोपालप्रसाद व्यास	५.००
अमृतप्रभा (ऐतिहासिक काव्य)	राजेश्वरप्रसाद नारायणसिंह	०.६२
अम्बपाली (ऐतिहासिक काव्य)	राजेश्वरप्रसाद नारायणसिंह	३.५०
राधा-कृष्ण (सचित्र कविताएँ)	राजेश्वरप्रसाद नारायणसिंह	२.५०
संकलिता (सचित्र मधुर गीतों का संग्रह)	राजेश्वरप्रसाद नारायणसिंह	२.५०
जिप्सी (पुश्किन) (काव्य)	अनुवादक—वीर राजेन्द्र ऋषि	२.००
काव्य-संग्रह (संकलित कविताएँ)	दशरथ ओझा-उदयभानु सिंह	२.००
चन्देरी का जौहर (सचित्र खोजपूर्ण-ऐतिहासिक-खण्डकाव्य)	आनन्द मिश्र	२.००
बाल-मेला (सचित्र बाल कविताएँ)	शम्भूनाथ 'शेष'	०.७५
एक था राजा, एक थी रानी (सचित्र तथा मनोरंजक पद्य-कथाएँ)	चिरंजीत	१.२५
नटखट के गीत (हास्य और विनोदपूर्ण सचित्र कविताएँ)	चिरंजीत	१.००
शिशु-गान (सरल तथा रोचक कविताएँ)	आर. बी. अवधेश	१.२५
अमृत का झरना (बच्चों के लिए कथात्मक कविताएँ)	लक्ष्मण त्रिपाठी	०.२५
नव-प्रभात (सचित्र कविताएँ)	चन्द्रिकाप्रसाद मिश्र	०.७५
हिन्दी कविता में युगान्तर (कविता विकास का अध्ययन)	डॉ. सुधीन्द्र	८.००

आत्माराम एण्ड संस, काश्मीरी गेट, दिल्ली-६